SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 3, January-February 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में व्याप्त समस्यायें

सुश्री भगवती जायसवाल

शोधार्थी, पी.एच.डी. (हिन्दी), कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर (छ.ग.)

डॉ. श्रद्धा हिरकने

सह प्राध्यापक, शोध निर्देशक, हिन्दी विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर (छ.ग.)

सारांश

आज हमारा देश बहुत सारी बड़ी समस्याओं का सामना कर रहा है। किसी राष्ट्र या समाज की वास्तविक स्थिति जाननी है तो उसका साहित्य देखो यह कहा जाता है। जिस राष्ट्र और समाज का साहित्य जितना समृद्ध होगा वह उतना ही समृद्ध होता है। किसी राष्ट्र या समाज में जितने भी परिवर्तन आए है वह साहित्य के माध्यम से आये है।

किसी भी काल के साहित्य के माध्यम से उस काल के परिस्थितियों जनमानस के खान-पान पहनावा व अन्य गतिविधियों का हमें पता चलता है। समाज साहित्य को प्रभावित करता है यह सत्य है पर साहित्य भी समाज पर प्रभाव डालता है, अगर हम यह कहे कि साहित्य और समाज एक सिक्के के दो पहलू की तरह है और साहित्य का समाज से उसी तरह संबंध है जैसे शरीर का आत्मा से भला उस शरीर का क्या मूल्य है जिसमें आत्मा नहीं और अगर साहित्य आत्मा है तो यह अजर अमर है। साहित्य का नाश नहीं हो सकता। साहित्य उस बीज की तरह है जो हजारों वर्षो तक धरती के भीतर पड़ा रहता है लेकिन अनुकूल वातावरण मिलते ही प्रकट हो जाता है। समाज नष्ट हो सकते है राष्ट्र नष्ट हो सकते है लेकिन साहित्य का नाश नहीं हो सकता, मैथिली शरण गुप्तजी ने कहा है कि केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए वरन उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 3, January-February 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

हिन्दी साहित्य के लेखकों में कई ऐसे उपन्यासकार रहे है जिन्होंने यथार्थ जीवन की घटनाओं व समस्याओं का अपने उपन्यासों के माध्यम से यथार्थ रूप में वर्णन किया है तथा उनके समाधान भी उनमें है जिनसे हम प्रेरणा ले सकते है उनमें से एक नाम है शशिप्रभा शास्त्री का जिन्होने बहुत ही सहज व सटीक रूप से अपने उपन्यासों में इन समस्याओं का वर्णन किया है शशिप्रभा शास्त्री ने कुल 16 (सोलह) उपन्यासों की रचना की है जिनमें कलात्मक ढंग से मानव मन व विचारों की पर्तो को खोलकर प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तावना

शशिप्रभा शास्त्री साठोत्तरी औपत्यासिक चेतना की एक प्रमुख साहित्यकार है उनके उपन्यासों में यथार्थ जीवन व उनकी समस्याओं का समग्र वर्णन है उन्होंने अपने उपन्यासों में जहां एक ओर सांस्कृतिक यथार्थ की विवेचना की है तो वहीं समाज के विकास के लिए बेहतर विकल्प देने का प्रयास किया है। उनके उपन्यासों में यथार्थ जीवन की समस्यायें है तथा उनके जो पात्र है वे किस तरह इन समस्याओं से निपटते है उनका हल क्या रहता है तथा उनका दृष्टिकोण व नजरिया क्या है और दुनिया के सामने एक अलग ही मिसाल प्रस्तुत करते है जिनसे हम सभी अपने सामान्य जीवन में व्याप्त समस्याओं से उबरने में सीख ले सकते है।

शशिप्रभा शास्त्री जी कहती है कि लेखक जीवन का ही चित्रण करता है मै कहती हू कि लेखक जिस किसी भी जिंदगी के किसी टुकड़े को चुनता है, किसी रूप में उन टुकड़े की लेखक को कीमत चुकानी पड़ती है।

शशिप्रभा शास्त्री जी किसी एक विचारधारा से जुड़कर नहीं रही उनकी अपनी एक स्वतंत्र विचारधारा रही है, समय के साथ उनके विचारधारा में परिवर्तन अवश्य हुआ।

शशिप्रभा शास्त्री जी संपूर्ण सामाजिक परिवेश से जुड़ी हुई लेखिका है। सभी प्रकार के लोग उनके सामाजिक परिवेश में आते है। शशिप्रभा शास्त्री जी ने धर्म, दर्शन, राजनीति तथा अर्थ के संबंध में भी अपने विचार व्यक्त किये है धर्म, दर्शन, राजनीति तथा अर्थ ने उन्हें एक सामान्य व्यक्ति की तरह ही प्रभावित किया है।

शशिप्रभा शास्त्री जी के उपन्यासों में व्याप्त समस्याये

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 3, January-February 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

1. **सामाजिक समस्यायें** - शशिप्रभा शास्त्री ने कई सामाजिक पहलुओं को पाठकों के सामने अपने लेखन के माध्यम से रखा है उनके उपन्यास ''वीरान रास्ते और झरना'' में विवाह से उत्पन्न होने वाली समस्या, ''अमलतास'' में ऊँचे घराने की बहु की कुंठा, दमन तथा पति - पत्नि के बीच व्याप्त रिक्तता, नावें उपन्यास में कुमारी माता द्वारा उसकी मनोदशा का वर्णन,''सीढ़िया'' उपन्यास में विधवाओं के जीवन में होने वाली समस्या, ''परछाईयों के पीछे'' उपन्यास में परित्क्यता तथा कामकाजी नारी की मनोदशा व उसके जीवन की समस्या, ''क्योंकि'' उपन्यास में समकालीन निम्न एवं मध्यमवर्गीय जीवन की त्रासदियों का वर्णन है यह हमारे समाज की सच्ची तस्वीर भी है। ''परसों के बाद'' उपन्यास में वर्तमानकालीन भारत में व्याप्त घिनौनी राजनीति, भारतीय वैज्ञानिकों के प्रति असहयोग तथा असंवेदनशीलता भ्रष्टाचार नेताओं के अनीतिपूर्ण व्यवहार के कारण भविष्य में निर्माण होने वाली समस्या, ''मीनारे'' उपन्यास में व्यक्ति संस्था, समाज तथा देश में व्याप्त षड़यंत्रों और भ्रष्टाचार का चित्र अत्यंत सार्थक एवं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

2. **आर्थिक समस्या** - स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी हम आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र नहीं है। आज का युग अर्थ प्रधान युग है। आज के युग में धन प्राप्ति के लिए लोग किसी भी सीमा तक जा सकते है। वर्तमान युग में व्यक्ति के जीवन में अर्थ ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण व प्रमुख हो गया है समाज में व्याप्त आर्थिक समस्याओं व उनके परिणामों को शशिप्रभा शास्त्री ने अपने उपन्यासों में बड़ी सूक्ष्मता से वर्णन किया है।

दहेज प्रथा हमारे समाज के लिए एक कलंकित प्रथा है। इस कुप्रथा के कारण कितनी ही युवतियों का जीवन इससे प्रभावित हुआ है। इसीलिए आधुनिक अनेक सजग साहित्यकारों ने अपनी विभिन्न रचनाओं के माध्यम से इस कुप्रथा पर अत्यंत निर्भयतापूर्वक लेखन कार्य करके लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। शशिप्रभा शास्त्री ने भी दहेज प्रथा के खिलाफ अपने उपन्यास के पात्रों द्वारा आक्रोश व्यक्त किया है।

बेरोजगारी की समस्या भी एक प्रमुख समस्या है। रोजगार के अभाव में आज का शिक्षित युवा कुमार्ग पर चला जाता है तो भारत देश का भविष्य भयंकर ही होगा। इस तथ्य को शशिप्रभा शास्त्री ने अपने उपन्यास ''क्योंकि'' में यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है।

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 3, January-February 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

किसी भी देश की प्रगति व उत्थान में भ्रष्टाचार सबसे अधिक बाधक है। उच्च पदस्थ अधिकारियों से लेकर छोटे-छोटे कर्मचारी और चपरासी तक में भ्रष्टाचार की वृति दिखायी देती है वे बिना धन के कोई काम नहीं करते। सरकारी दफ्तरों में बिना घूस दिए कोई काम व कोई भी फाइल आगे नहीं बढ़ती। राजनीतिक क्षेत्रों में भी बिना धन के कोई कार्य नहीं होता।

3. धार्मिक समस्याएँ - हमारा देश भारत धर्म की भूमि मानी जाती है। यहां धर्म की जड़े बहुत गहराई से लोगों से जुड़ी हुई है। धर्म जो है साहित्य को भी ऊँचा उठाता है शशिप्रभा शास्त्री ने अपने उपन्यास 'मीनारे' तथा 'परसों के बाद' में उस महाशक्ति को अवलंबित किया है चरम वैज्ञानिक उन्नति के बाद भी प्रगतिशील विचारों की धनी शशिप्रभा शास्त्री ने अपने उपन्यासों में ईश्वर पर प्रबल विश्वास व्यक्त किया है।

अमलतास उपन्यास में एक यथार्थवादी संदेह व्यक्त किया गया है। ''स्वतंत्रता के सूर्य के उदय होने पर राजे - रजवाड़े सब लुप्त हो चुके है, पर नारी की पीड़ा की कहानी उसके उत्सर्ग और संघर्ष की कहानी किसी भी युग में मिट सकेंगी - इसमें संदेह है।

नायिका कामदा का दीवान पति हरदेवलाल उसे अपने महल में इज्जत बेगम के आने के कारण वहाँ से दूर गांव भेजने का प्रबंध करता है। बड़े अनमने मन से कामदा हरदेवलाल की बात मान तो जाती है, परंतु शशिप्रभा शास्त्री ने रामायण के प्रसंग के माध्यम से पौराणिक काल से स्त्री पर होने वाले अत्याचारों का पर्दाफाश किया है कामदा को लगता है, ''वह आज परिप्यक्ता सीता है, जिसे उसके राम ने गर्भवती अवस्था में ही एक दिन लक्ष्मण के साथ वन में निष्कासित कर दिया था। उसका भाग्य तो सीता की तरह खोटा है। उसके स्वामी भी तो आज लगभग उसी स्थिति में घर से निष्कासित कर रहे है। [1]

इतना ही नहीं, आगे चलकर शशिप्रभा शास्त्री ने कामदा के द्वारा एक विद्रोही नारी के स्वर को पौराणिकता के द्वारा अत्याचार के विरूद्ध आवाज उठाने का साहस किया है।

4. मनोवैज्ञानिक समस्याएँ - मनुष्य के मन में जो भी विचार उत्पन्न होते है उनका अध्ययन करना मनोविज्ञान कहलाता है। मनोविज्ञान हमें मानसिक प्रक्रियाओं आचरण आदि को समझने का ज्ञान देता है इसके आधार पर हम अपनी समस्याओं का समाधान कर सकते है। शशिप्रभा शास्त्री के

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 3, January-February 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

उपन्यासो में मनोविज्ञान की बहुलता है आज हमारा समाज चाहे कितना भी विकसित हो किंतु उसका आंतरिक स्वरूप वही पारंपरिक है

शशिप्रभा शास्त्री का वीरान रास्ते और झरना' एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। इस उपन्यास में अचला की माँ अपना पति बूढ़ा होने के कारण अपने देवर के प्रति आकर्षित होकर उसके प्रति अपने आपको समर्पित कर देती है। उसकी बेटी अचला भी शैलेन्द्र से प्रेम करने के बावजूद उसके नौकरी के लिए शहर चले जाने के पश्चात् अमर नामके लड़के के साथ संबंध जोड़ती है। मन ही मन में कहती है, ''मैं भूल गयी की शैलेन्द्र भी मेरा कोई था। कभी उसके साथ भी घुल - मिलकर बाते की थी... और फिर अमर ही क्या अमर की पूरी टोली के साथ ही मेरा परिचय हो गया और परिचय धीरे-धीरे घनिष्ठता में परिणत होता चला। [2]

नीतिकारों का कथन है -

मन लोभी, मन लालची, मन कामी, मन चोर।

मन के मते न चाहिए, पलक पलक मन और। [3]

शशिप्रभा शास्त्री ने बाल मनोविज्ञान को तथा अधेड़ उम्र की महिलाओं के मनोविज्ञान को अत्यंत गंभीरतापूर्वक अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया है। 'परसों के बाद' उपन्यास एक ओर मुन्नों के माध्यम से बाल मनोविज्ञान को प्रस्तुत करता है तो दूसरी ओर इस समस्या पर भी प्रकाश डालता है कि देश में जब प्रतिभाशली वैज्ञानिकों की कद्र नहीं होती तो उन्हें विवश होकर विदेश जाने पर बाध्य होना पड़ता है।

निष्कर्ष

साहित्य और कला मानव जीवन की व्याख्या है मानव पैदा होने के बाद एक व्यक्ति के रूप में जीवन धारण करता है किंतु जो भी चीजे व जीवनयापन का ढंग वो सीखता है समाज के संपर्क में आकर ही सीखता है अतः जीवन के सामाजिक संबंधों विविध रूपों को चित्रित करना उपन्यास की मुख्य प्रवृत्ति रही है व्यक्ति और समाज में और व्यक्तिओं के बीच जो समस्याएँ है, उसको समझकर साहित्य की रचना करना एक साहित्यकार का मकसद होता है। आधुनिक मशीनी युग में जहाँ मानवीय रिश्तों में बहुत उलट फेर हो रहा है कई प्रकार की समस्याएँ व्याप्त है। शशिप्रभा शास्त्री जी ने

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 3, January-February 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

अपने उपन्यासों के माध्यम से इन समस्याओं को उजागर किया है और उनका हल भी उन उपन्यासों में है कि व्यक्ति को कैसा रूख अपनाना चाहिए। अपनी समाज की यथार्थता को उनके उपन्यासों में बहुत ही सटीक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

डॉ. संपूर्णानद ने एक बार बनारस में व्याख्यान देते हुए कहा था कि साहित्यकार कभी शून्य में अपनी रचना नहीं करता। अर्थात् एक साहित्यकार अपने मन में उठे विचारों तथा भावों को लेखन रूप में व्यक्त करते है।

शशिप्रभा शास्त्री के मानस पटल से जिन उपन्यासों की रचना हुई है उसमें समाज के भिन्न - भिन्न रूपों का वर्णन दिखाई देता है। इसमें उनके उपन्यास के पात्रों तथा चरित्रों के माध्यम से समाज की विभिन्न समस्या को उजागर किया गया है तथा समाज को एक संदेश दिया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- शास्त्री डॉ. शशि प्रभा (1973) - अमलतास, पूर्वोदय प्रकाशन दिल्ली
- शास्त्री डॉ. शशि प्रभा (1990) - नावें, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- शास्त्री डॉ. शशि प्रभा (1976) - सीढ़िया, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली
- शास्त्री डॉ. शशि प्रभा (1985) - परसों के बाद, ने नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली
- शास्त्री डॉ. शशि प्रभा (1979) - परछाइयों के पीछे, ने नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली
- शास्त्री डॉ. शशि प्रभा (1998) - कर्करेखा, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
- शास्त्री डॉ. शशि प्रभा (1988) - ये छोटे महायुद्ध, राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट दिल्ली

1. शास्त्री डॉ. शशि प्रभा (1973) - अमलतास, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 131
2. शास्त्री डॉ. शशि प्रभा (1983) - वीरान रास्ते और झरना, हिन्दी पॉकेट बुक्स प्रा.लि. दिल्ली, पृष्ठ 52-53
3. शशि जेकब - महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता, पृष्ठ 228

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 3, January-February 2025 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

- शास्त्री डॉ. शशि प्रभा (1988) - सागर पार का संसार, राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट दिल्ली
- शास्त्री डॉ. शशि प्रभा (1980) - क्योंकि, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली
- शास्त्री डॉ. शशि प्रभा (1985) - खामोश होते सवाल, विद्या विहार प्रकाशन, नई दिल्ली
- शास्त्री डॉ. शशि प्रभा (1989) - उम्र एक गलियारे की, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली
- शास्त्री डॉ. शशि प्रभा (1992) - मीनारें, किताबघर नई दिल्ली
- शास्त्री डॉ. शशि प्रभा (1995) - हर दिन इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- शास्त्री डॉ. शशि प्रभा (1989) - मंजिलों ऊपर, सारिका नवंकर
- शास्त्री डॉ. शशि प्रभा (1983) - वीरान रास्ते और झरना, हिन्दी पॉकेट बुक्स प्रा.लि. दिल्ली